भक्ति आंदोलन

- 16th Lecture by -

Mamta Rani
- [History Depart.]
SNSRKS COLLEGE,
SAHARSA

20-04-2020

Scanned with CamScanner

भक्ति आंदोलन

Page No. 1
Date

जिस प्रकार सूफी आंदोलन चलाया जा रहा था, उसी प्रकार सनातन धर्म के लोगों के ने भक्ति आंदोलन को संचालित किया। सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक कारण के साथ - साथ भक्ति में सरलता को भी शामिल किया जाता है जिसने इसके उदय में सहयोग किया।

भक्ति का शाब्दिक अर्थ होता है- ईश्वर के चरणों में अपने आप को पूर्ण रूप से समर्पित कर देना। भक्ति आंदोलन के अन्तर्गत मोक्ष प्राप्ति के तीन महत्वपूर्ण साधन है। ज्ञान, कर्म और भक्ति। इसके स्वरूप को दो भागों में बाँटा गया है —

(a) सगुण (b) निर्गुण।

(a) सगुण :- जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता हो। मूर्तिपूजा को मानने वाले सगुण कहलाये। जैसे - तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, रामदास आदि।

(b) निर्गुण :- जो संत निराकार ब्रह्म की आराधना करते थे। जो मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते थे। Eg:- कबीरदास, रैदास etc.

प्रमुख संत :- भक्ति आंदोलन को शुरू करने का श्रेय रामानुज को दिया जाता है। जिन्होंने आदि शुरू शंकराचार्य के सिद्धांत अद्वैतवाद के विरोध में भक्ति आंदोलन को प्रारंभ किया।

आदिगुरु शंकराचार्य केरल में कलाडि गाँव के रहने वाले थे। इनका सिद्धांत मायावाद के नाम से भी हमलोग जानते हैं। इन्होंने भारत में चारो दिशाओं में चार पीठ की स्थापना किया था। 12वीं सदी में तमिलनाडु के रहने वाले रामानुज ने भक्ति आंदोलन को शुरू किया।

Scanned with CamScanner

कुछ प्रमुख संत और उनके द्वारा स्थापित मत/सिद्धान्त :—

शंकराचार्य	अद्वैतवाद
रामानुज	विशिष्टाद्वैतवाद
माधवाचार्य	द्वैतवाद
निम्बार्क	द्वैताद्वैतवाद
वल्लभाचार्य/विष्णुस्वामी	शुद्धाद्वैतवाद

⇒ **रामानंद** :— यह रामानुज के शिष्य थे। यह भक्ति आंदोलन को दक्षिण भारत से लाकर उत्तर भारत में इसका प्रचार-प्रसार किया। प्रयाग को अपना कार्यस्थली बनाया। यह प्रथम संत थे जिन्होंने हिंदी भाषा में अपना उपदेश दिया। इनके शिष्यों में कबीरदास, रैदास, दादूदयाल आदि का नाम शामिल है।

⇒ **कबीरदास** :— यह निर्गुण मत के सबसे बड़े संत थे। यह गुरुनानक देव के समानवर्ती कवि थे। यह उत्तरप्रदेश में लहरतारा के रहने वाले थे। यह ब्राह्मण माँ के पुत्र थे, लेकिन इनका पालन जुलाहा परिवार ने किया था। इसलिए इनके व्यक्तित्व पर हिंदू और मुसलमान दोनों धर्मों का प्रभाव दिखलाई पड़ता है। यह पूर्ण रूप से गृहस्थ जीवन में रहकर ईश्वर की आराधना किया। इन्होंने ऊँचनीच, जातपात, छुआछूत, मूर्ति-पूजा आदि का विरोध किया।
इनकी पुस्तक → बीजक, शबद, रमैनी, साखी।

⇒ **रैदास** :— यह रविदास के नाम से भी विख्यात है। यह मीराबाई के गुरु थे।

Scanned with CamScanner

इन्होंने निर्गुण मत का पालन करते हुए भक्ति आंदोलन में सहयोग किया। इन्होंने रायदासी संप्रदाय की स्थापना किया था।

⇒ दादूदयाल :- यह अहमदाबाद में भक्ति आंदोलन को संचालित किये थे। इन्होंने निपख (असंप्रदायिक) आंदोलन को प्रारंभ किया था। इनके उपदेशों का संग्रह दादूराम की वाणी है।

⇒ चैतन्य महाप्रभु :- यह बंगाल में भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक थे। इनका मूल नाम निमाई पंडित था। इनको महाप्रभु भी कहा गया है। इन्होंने संकीर्तन प्रथा और गोसाई संघ की स्थापना किया भ था। इन्होंने कृष्ण की भक्ति में अपने जीवन को समर्पित किया।

- यह मीराबाई और सिकन्दर लोदी के समकालीन थे।
- यह मीराबाई और सिकन्दर लोदी के समकालीन थे।
- चैतन्य महाप्रभु को उनके अनुयायी उनको भगवान कृष्ण का अवतार मानते थे।

⇒ तुलसीदास :- यह भगवान राम के आराधक थे। इनके बचपन का नाम रामबोला था। इनके पिता का नाम आत्माराम और माँ का नाम हुलसीबाई था। इन्होंने रामचरितमानस नामक ग्रंथ की रचना अवधी भाषा मे किया था।

इन्होंने विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, हनुमान चालीसा आदि की भी रचना किये थे।

⇒ सूरदास :- यह भगवान कृष्ण के भक्त थे। इन्होंने भगवान कृष्ण के बाल लीलाओं का सबसे अच्छे ढंग से अपनी ग्रंथ ~~सूरदास~~ सूरसागर मे उल्लेख किया है। सूरसागर नामक ग्रंथ ब्रजभाषा मे लिखा गया है।

Scanned with CamScanner

⇒ गुरुनानक देव :- यह कबीरदास के समान मानवतावादी कवि थे। यह सिख आंदोलन के जनक भी थे। और सिक्खो के प्रथम गुरु भी थे।
- इन्होंने संगत और पंगत अर्थात् धर्मशाला और लंगर व्यवस्था को प्रारंभ किया था।
- इन्होंने सत्य नाम की पूजा को प्रारंभ किया था।

⇒ बल्लभाचार्य :- इन्होंने पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय की स्थापना किया था एवं शुद्धाद्वैतवाद मत को भी स्थापित किया था।

⇒ महाराष्ट्र के संत :- यहाँ पर भक्ति आंदोलन दो भागों में विभक्त हो गया -
ⓐ वरकरी सम्प्रदाय :- कृष्ण के उपासक।
ⓑ धारकरी संप्रदाय :- राम के उपासक।

भक्ति आंदोलन के संतो ने महाराष्ट्र के पंढरपुर में स्थित भगवान विठोबा की पूजा को अपना माध्यम बनाया था। संत ज्ञानेश्वर इस आंदोलन के महाराष्ट्र में प्रथम संत थे जिन्होंने ज्ञानेश्वरी नामक ग्रंथ की रचना किया था।
- सबसे लोकप्रिय संत समर्थ रामदास थे।

इसप्रकार भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में भक्ति आंदोलन को चलाया गया जिसने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सभी भारतीय प्रभावित हुए। समाज के सभी क्षेत्रों में इसका असर दिखा।

=*=

Scanned with CamScanner